गोपेश्वर में भी नहीं रुके। यहाँ के प्राचीन मन्दिर, उसकी मूर्तियों और त्रिशूल-रूपी स्तम्भ पर प्राचीन लेख देखकर हमने शिव की घाटी से विदा ली। अब हम विष्णु अर्थात् बद्रीनारायण के प्रदेश में थे। चमोली पहुँचकर बस पकड़ी और पीपलकोटी आकर रुके। यहाँ से फिर पैदल यात्रा का आरम्भ था।

बद्रीनाथ की घाटी में केदारनाथ की घाटी-जैसा सौन्दर्य नहीं है। हरीतिमा नहीं, हिमशिखर नहीं, केवल अलकनंदा का रूपजाल है। कभी वह गम्भीर गति से गर्जन करती है, कभी ऊँचे से गिरकर प्रपात बनाती है। कभी अतल में बहती है, तो कभी मार्ग को छू लेती है। कई जगह बर्फ के प्राकृतिक पुल बन गये थे और उनके नीचे इधर-उधर से धाराएँ ऐसे भाग रही थीं जैसे नटखट बालक गुरुजनों के घेरे को तोड़कर शोर मचाते हुए निकल भागते हैं। उसी शोर में यात्रियों का शोर मिल गया था क्योंकि अपेक्षाकृत सुगम होने के कारण इस ओर यात्री बहुत आते हैं। उन्हीं के साथ हम गरुड़-गंगा पहुँच गये। यहाँ सुना कि जो गंगा में स्नान कर बिना देखे पत्थर का एक टुकड़ा पूजा करने के लिये घर ले जाता है – उसे साँपों का डर नहीं रहता। लेकिन हमारे एक मित्र थे जो यात्रा में नहाना ही आवश्यक नहीं समझते थे। फिर इस यात्रा में हर कहीं पानी रक्त को जमा देता है। एक बार ऐसे ही स्थान पर उन्हें नहाने के लिये विवश किया गया तो बेचारे नहाने गये। लौटे तो बुरी तरह काँप रहे थे। हमने पूछा, 'कहिये, दिल जम गया या बच गया।' बोले, 'जम कैसे सकता था, हमने वहाँ पानी लगने ही नहीं दिया।'

इसी गरुड़-गंगा से पाताल गंगा की चढ़ाई आरम्भ होती है। गंगा सचमुच पाताल में है और किनारे का पहाड़ हमेशा टूटता रहता है। सड़क के नाम पर पगडंडी इतनी सँकरी और टेढ़ी-मेढ़ी है जैसे काली भयानक घटा में बिजली की चमक। लेकिन सुना जाता है कि इसी प्रदेश में पार्वती ने शिव से विवाह करने के लिये तप किया था। वर्षों पत्ते खाकर रही थीं, इसीलिए आज भी यह पर्णखंड या पैखंडा कहलाता है। यही कहानियाँ सुनते-सुनते हम जोषीमठ जा पहुँचे। यहाँ से बद्रीनाथ केवल १९ मील रह जाता है। यह आद्य शंकराचार्य द्वारा स्थापित चार मठों में से एक है। यहाँ पर हमने **कीमू** अर्थात् **शहतूत** का वह पेड़ देखा, जिसके बारे में सुना जाता है कि उसके नीचे बैठकर प्रतिभापुंज शंकर ने उपनिषदों पर

टीकाएँ लिखी थीं। नीचे छोटा-सा कस्बा है। उसमें भी कई मन्दिर हैं। इन मन्दिरों में जो मूर्तियाँ हैं उनमें से कई कला की दृष्टि से बड़ी सुन्दर हैं।

आगे फिर दो मील की सीधी उतराई आती है जो हमें विष्णु गंगा और अलकनंदा के संगम पर विष्णुप्रयाग में पहुँचा देती है। काफी डरावना स्थान है। नंगे ऊँचे पहाड़, तंग गहरी घाटी पर आदमी की श्रद्धा ने कब किससे हार मानी है? यात्रियों का कारवाँ हाँफता, साँस लेता, कभी अलकनंदा को, कभी पर्वत-शिखर को, कभी पीठ पर बोझ उठाये श्रम की प्रतिमा गढ़वाली नारियों को देखता और आगे बढ़ जाता। मार्ग में बच्चे गा-गाकर पाई-पैसा माँगते, युवतियाँ भी माँगने लगतीं – पाई-पैसा सुइयाँ या चूडियाँ – सारे रास्ते यही देखते आये थे पर यह अच्छा नहीं लगता था।

हम पांडु राजा द्वारा बसाई गई बस्ती पांडुकेश्वर में नहीं रुके। हाँ, वह मन्दिर अवश्य देखा जिसे कहते हैं, पांडवों ने स्थापित किया था। उस शिखर को भी देखा जहाँ निर्वाण के लिए जाते समय पांडवों ने अन्तिम बार **चौसर** खेली थी। यहाँ से फूलों की प्रसिद्ध घाटी और सिक्खों के तीर्थ स्थान लोकपाल को मार्ग जाता है। वही सब देखते हुए हम २ जून को अन्तिम पड़ाव की ओर चले। इस मार्ग पर अलकनंदा बार-बार तेज़ी से ऊपर से उतरती है, प्रपात बनाती है और जब सूर्य की किरण उससे स्पर्श करती है तो न जाने कितने इन्द्रधनुष निर्मित हो जाते हैं। देवदारु के पेड़ भी इधर बहुत हैं। यहाँ से हमें कई बार बर्फ पर चलना पड़ा।

आखिर हम कंचन गंगा को पार करके 'कुबेर शिला' के पास पहुँच गये। यह वह स्थान है जहाँ से यात्रियों को विशालापुरी के प्रथम दर्शन होते हैं। तूफान आ रहा था और मैं इस पुरी को पहले ही देख चुका था, फिर भी मुझे रोमांच हो आया। मंज़िल पर पहुँच जाने पर रोमांच हो ही आता है।

विशालापुरी अलकनंदा के दाहिने किनारे पर बसी है। सवारी को छोड़कर आज के युग की लगभग सभी सुविधाएँ वहाँ मिलती हैं। कमोवेश सारे मार्ग पर मिलती हैं। कहते हैं कि प्राचीन काल में भगवान ने नर-नारायण के रूप में यहाँ तप किया था। उसी की याद में अलकनंदा के दोनों ओर के पर्वत नर-नारायण कहलाते हैं। कभी यहाँ बेरी का वन था। बदरी बेर को कहते हैं। इसी कारण नारायण यहाँ बदरी नारायण के नाम

से प्रसिद्ध हैं। १०,४८० फुट की ऊँचाई पर बना हुआ यह मन्दिर, कहते हैं, आद्य शंकराचार्य ने स्थापित किया था। उससे पहले की कहानी अन्धकार में है। नहीं मालूम सत्य क्या है, पर वहाँ की स्थिति देखकर कल्पना की जा सकती है न जाने कितनी बार हिम के भयंकर तूफानों ने इस मन्दिर को नष्ट किया होगा और फिर संघर्षशील मानव ने, श्रद्धा के बल पर, पत्थरों की ये बोलती दीवारें चुनी होंगी। वर्तमान मन्दिर कला की दृष्टि से कोई महत्व नहीं रखता फिर भी उसमें एक आकर्षण है। वह आकर्षण है —सरल भक्ति का, प्रकृति के वैभव का।

तीन दिन तक हम उस प्रदेश का वैभव देखते रहे। बद्रीनाथ और नीलकंठ के हिम-शिखरों की छाया में और नारायण पर्वत की गोद में अलकनंदा के तट पर बसी यह नगरी दो मील परे उस पार भारत का अन्तिम गाँव माना जाता है। रक्तवर्णी निवासी, लाल चोंच और लाल पंजोंवाला कौवे-जैसा पक्षी क्याँगचू, पाँच मील पर वसुधारा का प्रसिद्ध प्रपात जो उस समय जमा हुआ था, लेकिन इसी कारा निद्रा का वह सौन्दर्य उसे और भी प्यारा बना रहा था। उसकी धारा तक पहुँचने में बर्फ पर चलने में जो रोमांचकारी आनन्द हमें मिला वह भुलाये न भूलेगा। और भी पवित्र शिलाएँ, धाराएँ और कुण्ड हमने देखे लेकिन उनमें सबसे महत्त्वपूर्ण है, तप्त कुण्ड। इस शीत प्रदेश में इस कुण्ड का पानी इतना गर्म है कि सहसा हाथ देने का साहस नहीं होता। हम उसमें खूब नहाये। सोचते रहे, न जाने कब यह स्वास्थ्यवर्धक स्थान के रूप में प्रसिद्ध होगा।

मन्दिर में पूजा भी की। श्रृंगार, शयन सभी रूपों में नारायण की मूर्ति के दर्शन किये। हरिजनों को मन्दिर में प्रवेश करते देख, भक्तों को गदगद होते देखा, भावावेश में रोते देखा, परन्तु उस मुक्त वातावरण में नाद द्वारा ब्रह्मा की उपासना करनेवाले एक महात्मा का संगीत सुनकर जो आनन्द आया वह बताया न जा सकेगा। समय भी कहाँ है। तब नहीं था सो हमें लौटना पड़ा। लौटे। मोटर के पथ पर आकर मेरे दिल से इस यात्रा के साथी कुलियों और घोड़ेवालों से विदा ली। यात्रा का यह अस्थायी स्नेह भी कितना पवित्र होता है। अब फिर वही मोटर, रेल यंत्र, मन फिर-फिर कर वहीं जाना चाहता है, पर इस 'पर' की कहानी आप सब जानते हैं।

कठिन शब्दार्थ :

अलख = अगोचर, जो देखा न जा सके; अछूता = जो छुआ न गया हो; कुहरे = ओस; धर्मभीरू = धर्म से डरनेवाला; पगडंडी = पैदल जाने का रास्ता; कोलाहल = शोर; डाँडी = एक झोली जैसी पहाड़ी सवारी; कारवाँ = यात्रियों का समूह; घिघियाना = गिड़गिड़ाना; शहतूत = एक प्रकार का वृक्ष जिसका फल मीठा होता है; क्याँगचू = एक पंछी जिसका पैर लाल होता है; कंडी = लकड़ी का झूला।

I) एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

१) कालिदास ने हिमालय को क्या कहा है?
२) यात्रा के नियम के अनुसार लेखक पहले कहाँ गये?
३) केदारनाथ की शीत-ऋतु की राजधानी का नाम क्या है?
४) सबसे ऊँचे स्थान पर बना हुआ मंदिर कौन-सा है?
५) आठ वर्ष की प्यारी बच्ची का नाम क्या है?
६) जोषीमठ से बद्रीनाथ कितने मील की दूरी पर है?
७) किस पेड़ के नीचे बैठकर प्रतिभापुंज शंकर ने उपनिषदों पर टीकाएँ लिखी थीं?
८) बदरीनारायण मंदिर कितने फुट की ऊँचाई पर है?

II) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

१) हिमालय की विशेषता का वर्णन कीजिए।
२) बद्रीनाथ यात्रा में लेखक और उनके साथियों की दिनचर्या लिखिए।
३) तुंगनाथ शिखर के सौंदर्य के संबंध में लेखक ने क्या कहा है?
४) बद्रीनाथ की घाटी का चित्रण कीजिए।
५) बद्रीनारायण मंदिर की विशेषता पर प्रकाश डालिए।

III) निम्नलिखित वाक्य किसने किससे कहे ?

१) 'अरे बिच्छू – बिच्छू!'
२) 'कहिए, दिल जम गया या बच गया।'
३) मंजिल पर पहुँच जाने पर रोमांच हो ही आता है।
४) यात्रा का यह अस्थायी स्नेह भी कितना पवित्र होता है।

IV) ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए :

१) ऐसे प्रदेश में पहुँचकर अकवि भी कवि और अदार्शनिक भी दार्शनिक बन जाता है।

२) यह मार्ग अपेक्षाकृत भयानक है, इसलिए इसका सौंदर्य भी अभी अछूता है।

३) हाय राम, वह तो सचमुच बिच्छू लग रहा था, पर वह चलता क्यों नहीं?

४) जम कैसे सकता था, हमने वहाँ पानी लगने ही नहीं दिया।

५) वह आकर्षण है — सरल भक्ति का, प्रकृति के वैभव का।

V) वाक्य शुद्ध कीजिए :

१) हम प्रतिदिन सबेरे तीन बजे उठता था।

२) वह तो सचमुच बिच्छू लग रही थी।

३) लेकिन ये कथाएँ कहाँ तक कहा जाए।

४) मंदिर में पूजा हो रहा था।

VI) कोष्ठक में दिए गए कारक चिन्हों से रिक्त स्थान भरिए :

(के, ने, का, पर)

१) मंजिल ..... पहुँच जाने पर रोमांच हो ही आता है।

२) कहते हैं कि प्राचीन काल में भगवान ..... नर-नारायण के रूप में यहाँ तप किया था।

३) देवदारू ..... पेड़ भी इधर बहुत हैं।

४) तीन दिन तक हम उस प्रदेश ..... वैभव देखते रहे।

VII) निम्नलिखित वाक्यों को सूचना के अनुसार बदलिए :

१) हम प्रतिदिन सबेरे तीन बजे उठते थे। (वर्तमान काल में बदलिए)

२) अधिकांश यात्री पैदल चलते हैं। (भविष्यत् काल में बदलिए)

३) बद्रीनाथ हमें पुकार रहे हैं। (भूतकाल में बदलिए)

VIII) अन्य लिंग रूप लिखिए :

बालक, भक्त, कवि, भगवान, वृद्ध।

IX) अन्य वचन रूप लिखिए :
रानी, यात्रा, दर्शन, ऋतु, कहानी, चोटी, भाषा।

X) विलोम शब्द लिखिए :
आगे, ऊँचा, उठना, उतार।

XI) निम्नलिखित अनुच्छेद पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

इसी गरुड-गंगा से पाताल गंगा की चढ़ाई आरम्भ होती है। गंगा सचमुच पाताल में है और किनारे का पहाड़ हमेशा टूटता रहता है। सड़क के नाम पर पगडंडी इतनी सँकरी और टेढ़ी-मेढ़ी है जैसे काली भयानक घटा में बिजली की चमक। लेकिन सुना जाता है, कि इसी प्रदेश में पार्वती ने शिव से विवाह करने के लिए तप किया था। वर्षों पत्ते खाकर रही थी, इसीलिए आज भी यह पर्णखंड या पैखंडा कहलाता है। यही कहानियाँ सुनते-सुनते हम जोषीमठ जा पहुँचे। यहाँ से बद्रीनाथ केवल १९ मील रह जाता है। यह आद्य शंकराचार्य द्वारा स्थापित चार मठों में से एक है। यहाँ पर हमने कीमू अर्थात शहतूत का वह पेड़ देखा, जिसके बारे में सुना जाता है कि उसके नीचे बैठकर प्रतिभापुंज शंकर ने उपनिषदों पर टीकाएँ लिखी थीं। नीचे छोटा-सा कस्बा है। उसमें भी कई मंदिर हैं। इन मंदिरों में जो मूर्तियाँ हैं उनमें से कई कला की दृष्टि से बड़ी सुन्दर हैं।

प्रश्न : १) पाताल गंगा की चढ़ाई कहाँ से आरम्भ होती है?
२) पार्वती ने किससे विवाह करने के लिए तप किया था?
३) जोषीमठ से बद्रीनाथ कितने मील की दूरी पर है?
४) जोषीमठ की स्थापना किसने की थी?
५) शंकराचार्य ने उपनिषदों पर टीकाएँ किस पेड़ के नीचे बैठकर लिखी थीं?

XII) योग्यता विस्तार :
भारत के सांस्कृतिक वैभव प्रधान स्थानों के यात्रा-वृत्तांत पढ़िए।

* * * * * *

८. नालायक

– विवेकी राय

लेखक परिचय :

ग्राम-जीवन और लोक-संस्कृति के प्रति समर्पित रचनाकार विवेकी राय जी का जन्म २० नवंबर १९२३ को गाजीपुर जिले के सोनवानी नामक गाँव के किसान परिवार में हुआ। आप स्वयं को किसान साहित्यकार कहते हैं। अतीत के अभावग्रस्त जीवन, ग्रामीण शिक्षा और प्राइमरी स्कूल के शिक्षक से आरम्भ जीवन यात्रा को, उच्च शिक्षण संस्था की रीडर पद पर सेवा, बड़े लोगों से संपर्क – सान्निध्य तथा ख्याति प्राप्त रचनाकार के रूप में स्थापित हो जाने पर भी सादगी से परिचय में प्रस्तुति उनकी लेखकीय विश्वसनीयता का उत्कृष्ट साक्ष्य है।

हिन्दी और भोजपुरी दोनों में आपने नाटक विधा को छोड़ सारी विधाओं को अधिकारिक रूप से उठाया है तथा अपनी अमिट छाप छोड़ी है।

आपकी प्रमुख कृतियाँ हैं – काव्य : 'अर्गला', 'रजनीगंधा', 'दीक्षा'; कहानी संग्रह : 'जीवन परिधि', 'नयी कोयल', 'गूँगा जहाज', 'कालातीत', 'अतिथि', 'दलित विमर्श और विवेकी राय की कहानियाँ' आदि।

प्रस्तुत कहानी में मुख्य रूप से थर्ड डिवीजन में पास होनेवालों की मनोदशा को दर्शाया गया है। साथ ही इसमें बेरोजगारी जैसी व्यापक समस्या को उजागर किया गया है।

आज युवाओं में नौकरी के लिए होड़ लगी है। नौकरी पर ही अवलंबित न होकर, किसी न किसी काम पर या व्यवहार में जुट जाने की कला को अपनाना चाहिए। अंको के आधार पर ही नहीं बल्कि प्रतिभा के आधार पर भी युवकों को नौकरियों में चाँस मिले। इन विचारों को ध्यान में रखकर इस पाठ का चयन किया गया है।

जनवरी में एक दिन जब शीतलहर के चाँटे बरस रहे थे और शहर के ऊँचे-ऊँचे भवनों से ऊपर उठे सूरज की किरणें थरथर कर रही थीं, लोगों ने देखा कि शहर में असाधारण भीड़ बढ़ गयी है। यह कैसा कुम्भ पर्व कुछ पहले ही यहाँ आ गया? अथवा स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरु जैसा कोई नेता तो शहर में नहीं आया है? अथवा पाकिस्तान से शरणार्थी आ गये? अथवा आज मिट्टी का तेल बँटने वाला है? ये कैसे देहाती घुसपैठिये नगर की शांत सड़कों को हलचलों में डुबोने लगे? कैसे फटेहाल हैं? चेहरों पर हवाइयाँ उड़ रही हैं। आँखों में गहरी उदासी और निराशा है। हर उम्र के लोग हैं। नगर के पथरीले फैलाव में छुट्टे मवेशी की तरह घूम रहे हैं। बीच-बीच में कुछ ऊनी कपड़े और एम्बेसेडर जूते वाले लोग भी हैं। ये उन्हें हाँकने वाले हैं।

बाद में पता चला कि आज जिला परिषद् में प्राइमरी स्कूलों के लिए अनट्रेण्ड अध्यापकों का चुनाव है। तीन सौ अध्यापक चुने जायेंगे। दस हजार उम्मीदवार आये हैं और प्रति उम्मीदवार लगभग ५-६ सिफारिश करने वाले। दर्शक भी काफी हैं और सब मिलाकर एक मेला उतर आया है।

मेरे यहाँ एक उम्मीदवार और उसके चार सिफारिशी पहुँचे तो मैंने इस तरह की बात की जैसे मैं ही चेयरमैन साहब हूँ। मैंने पूछा:

''आपका उम्मीदवार किस डिवीजन में पास है?''

''थर्ड डिवीजन।'' उत्तर मिला।

''थर्ड डिवीजन हाई स्कूल पास है? क्या वह हरिजन है? क्या वह स्वतंत्रता सेनानी का आश्रित है? क्या वह सीमा पर तैनात सैनिक का पुत्र है?''

''नहीं, यह सब तो कुछ नहीं।''

''तब कैसे चले हैं उसे लेकर? थर्ड डिवीजनर के लिए दुनिया में कोई जगह नहीं है।''

''आप ठीक कहते हैं। मगर थर्ड डिवीजनर के लिए दुनिया में कोई जगह हो चाहे न हो, पर स्कूल मास्टर की जगह तो रिजर्व ही समझिये।''

''आप लोग गलत समझते हैं। अब शिक्षा में तरक्की की जायेगी। योग्य लोग भरती किये जायेंगे। शिक्षा का स्तर गिर रहा है। उसे अब

और नहीं गिरने दिया जायेगा।''

''शिक्षा का स्तर तो आप नहीं गिरने देंगे, परन्तु यह बताइये कि आप क्या चुनाव भी नहीं लड़ेंगे?''

अब तक तो मैं जैसे चेयरमैन साहब बना बोल रहा था, परन्तु इस प्रश्न के बाद मेरी कुर्सी जैसे खिसक गयी और मैं मास्टर होकर, जमीन पर उतरकर बात करने लगा। बात देर तक हुई। अन्त में मैंने कहा ।

''चेयरमैन साहब से मेरा ऐसा परिचय नहीं है कि मैं आपके उम्मीदवार की सिफारिश में चलूँ। इसके लिए आप लोग ही काफी हैं। हाँ, चलिए आपके साथ चल सकता हूँ।''

जीवन में पहली बार सिफारिश का यह तरीका जाना। एक कागज़ पर उम्मीदवार का नाम, ग्राम और शिक्षादि लिखा गया और उसके नीचे सिफारिश करने वालों ने अपने-अपने हस्ताक्षर किये। कागज़ मेरी तरफ बढ़ाया गया। मैंने भी बकलम खुद कर दिया।

अब संक्षेप में आज का काम था वह कागज चेयरमैन साहब के हाथों में दे देना। चुनाव की कार्रवाई होने में एक घण्टे की देर थी। पता चला कि चेयरमैन साहब जिला परिषद् में हैं। हम लोग पहुँचे।

लेकिन यह क्या? यहाँ तो अद्भुत अपार जनसागर पहले से ही उमड़कर जम गया है। प्रवेश-द्वार से लेकर बाहर आँगन, लान, मैदान, चौक, सड़क और लगभग दो-तीन फर्लांग तक ठसमठस आदमी भरे हैं। जिधर देखें उधर मुण्ड ही मुण्ड दिखाई पड़ रहे हैं। किसीको पता नहीं कि क्यों खड़े हैं। बस खड़े हैं। चुनाव हो रहा है। जो पहले आये वे पहले से फाटक की ओर खड़े हैं और जो बाद में आये वे उनके पीछे खड़े होते गये। जो आगे हैं उनका निकलना कठिन है। भीतर परिषद् कार्यालय है जो बन्द है। यही रहस्य है। सब लोग समझते हैं, कुछ हो रहा है। सब लोग जमे हैं कि कहीं बाहर गये और इधर कहीं कुछ हो न जाए।

बड़ी देर तक भीतर जाने का प्रयत्न किया, मगर किसी प्रकार सफलता नहीं मिली तो उसी प्रकार हम लोग भी खड़े हो गये। पान, चाय, चाट, चीनिया बादाम और मिठाई की दुकान का सामान सुबह ही चट हो गया। नया स्टाक लाने के लिए ये शहर की ओर दौड़े। फुटपाथ पर बैठे हाथ देखने वाले ज्योतिषी और शकुन निकालने वाले पण्डितों की चल निकली। सड़क बन्द हो गयी। रिक्शे घूमकर दूसरी ओर से जाने लगे।

देश का विकास, शिक्षा की उन्नति, जनता का नवजागरण, पंचवर्षीय योजनाओं की सफलता, बेकारी की रोकथाम और सच्चे स्वराज्य की झाँकी सड़कों पर साक्षात् दृष्टिगोचर होने लगी।

इसी समय अत्यंत गुप्त रूप से ज्ञात हुआ कि चेयरमैन साहब अभी अपने बंगले पर हैं। उम्मीदवार को वहाँ छोड़कर हम लोग चल पड़े। पता लगा कि अब फतह हुई परन्तु यहाँ का मोर्चा और कड़ा निकला। जितनी भीड़ जिला परिषद् के कार्यालय पर थी उससे दूनी भीड़ यहाँ पर थी। मैदान में लोग बिना बाल के ज्वार-बाजरे की ढ़ाठा की तरह खड़े थे। उसी तरह की बातें हो रही थीं जिस प्रकार चुनाव-पर्व पर पोलिंग स्टेशनों पर होती है। अधिकांश लोगों के हाथ में बैलेट पेपर की तरह सिफारिशी कागज शोभा दे रहा था। सबकी दृष्टि बंगले के फाटक पर लगी थी, जैसे रोजे वाले मुसलमान भाई ईद के चाँद की ओर टकटकी लगाये हों। सभी लोग आगे जाना चाहते हैं परन्तु आगे जमे हुए लोगों का जमाव इतना सघन है कि अक्ल काम नहीं कर रही है। यह सभी उसी प्रकार है जैसे पदों पर जमे हुए लोगों की अगली कतारें पीछे वालों की चोंच नहीं डूबने देती है।

इसी समय दो गाड़ी पुलिस आ गयी। शायद भीड़ को नियंत्रित करने के लिए फोन किया गया था, और लाउड स्पीकर से सुनायी पड़ा :

''सज्जनों, ज्ञात हुआ है कि आप लोग थर्ड डिवीजनरों के सिफारिशी हैं। आप लोगों को बहुत समझाया गया कि सिफारिश से काम नहीं चलेगा, परन्तु आप लोग मानते ही नहीं हैं। अब स्कूल-मास्टर के लिए थर्ड डिवीजनर्स नहीं लिए जायेंगे। यदि आप लोग बिना उस सिफारिशी कागज को दिये टलने वाले नहीं हैं तो दे दीजिये। पचास व्यक्ति खांची लेकर तैनात किये जाते हैं। इन्हीं खांचियों में डाल दें।''

पुलिस की सहायता से खांचियों में कागज डालने का कार्य सम्पन्न हुआ और देखते ही देखते सब खांचियाँ भर गयीं। बंगले के सामने भुसहुड़ की तरह कागजों की ढेरी लग गयी। जैसे कागजों का टुकड़ा लूटकर खूब ऊँचा सम्मत बाबा बना दिया गया है।

अब असली किस्सा सुनिये। वहाँ से हम लोग जिला परिषद् में लौट रहे थे तब तक हम लोगों का वह उम्मीदवार उधर से दौड़ता आता हुआ मिल गया। वह बहुत उत्तेजित था। सुबह का सिकुड़ा वह बालक अब तनकर जवान की तरह लग रहा था। उसका मुँह लाल हो गया था

और रोवें फड़क रहे थे। उसने कहा :

'यह देखिए साहब, लोग कहते हैं कि थर्ड डिवीजनर नहीं लिए जायेंगे। क्यों नहीं लिए जायेंगे? जिसका ज्यादा वोट होगा वह लिया जायेगा। हम लोग फर्स्ट और सेकेण्ड डिवीजन वालों के खिलाफ आन्दोलन करेंगे। ये लोग हम लोगों का हक मार रहे हैं, हम लोग मीटिंग करने जा रहे हैं।'

यह कहकर वह भाग गया। जैसे गोबर बारूद हो गया। लड़का है, कहीं कुछ गलती न कर दे, इसलिए हम लोग भी उधर ही लपके। कुछ दूर आगे बढ़ने पर देखा कि एक भारी भीड़ हूँ-हाँ करती पश्चिम की ओर सड़क पकड़कर भागती चली जा रही है। कुछ लोग 'थर्ड डिवीजनर्स जिन्दाबाद' के नारे लगा रहे हैं। कुछ लोग परिषद् के अधिकारियों के विरुद्ध बक-झक रहे हैं।

एक लड़के के द्वारा ज्ञात हुआ कि शहर से बाहर जहाँ पुलिस और सी.आई.डी. वाले नहीं पहुँच सकें, उन लोगों की कान्फ्रेन्स होगी और उसमें अत्यंत आवश्यक प्रस्ताव पास किये जायेंगे। ये सब लोग जो जा रहे हैं सभी थर्ड डिवीजनर्स हैं।

लगभग डेढ़ मील दूर नदी के किनारे एक बगीचे में सब लोग एकत्र हुए। एक काली माई का टूटा चबूतरा मंच का कार्य कर रहा था, जिस पर खड़े एक युवक ने कहा :

''दोस्तों, घास पर, पेड़ पर, मेड़ पर, डाल पर, और जमीन पर जिसे जहाँ जगह मिले बैठ जाइये। आज हम इस थर्ड डिवीजनर्स कान्फ्रेन्स में 'करो या मरो' का नारा लगायेंगे और जीवन का संकल्प लेंगे। अब तक हम लोग मौत का, नरक का जीवन बिताते आ रहे हैं। सारी दुनिया हमें धक्का देती है। हमारे लिए हर जगह दरवाजा बन्द है। जैसे हम आदमी नहीं बैल हैं। हम हरगिज़ नहीं मानते कि कागज की तीन लकीरों के कारण हम लोग नालायक हैं। हमने फीस दी, हमने स्कूल में समय बिताया, हमने परीक्षा दी। परीक्षा में यदि थर्ड डिवीजन आया तो यह हमारी सरकार का, स्कूल का, स्कूल के अधिकारियों का दोष है। हम उनसे पूछना चाहते हैं कि आखिर हमारा थर्ड डिवीजन क्यों आया? हमारा जो नुकसान हुआ उसका जिम्मेदार कौन है? हम लोग उक्त संस्थानों और लोगों पर मुकद्दमा कायम करेंगे और हरजाना लेंगे। हम

लोग फर्स्ट क्लास के आदमी हैं। हम लोगों को जिन्होंने थर्ड क्लास का बनाया, वे अपराधी हैं, चोर हैं। ये लोग आज 'उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे' की कहावत चरितार्थ कर रहे हैं। हम लोगों को नौकरी के लिए नाक रगड़नी पड़ती है। दो-दो, चार-चार लोगों को खर्चा-वर्चा देकर साथ लाना पड़ता है। इसपर भी दुत्कार। खिलवाड़ नहीं, यह प्रजातंत्र है। वोट का युग है। तो हो जाए वोटिंग, देखें किसकी संख्या अधिक है। संख्या-बल पर निरक्षर यदि एम.एल.ए. हो सकता है तो क्या हम थर्ड डिवीजनर्स को मुदर्रिसी भी नहीं मिल सकती है? भाइयों, यही मुदर्रिसी तो हम लोगों के लिए शरण थी। सो इसपर भी फर्स्ट-सेकिण्ड डिवीजन वालों ने धावा बोल दिया। यह अधिकार अतिक्रमण है। वे लोग रेल में, विकास में और दूसरी सरकारी नौकरियों में जायें। यह मास्टर की गद्दी छोड़ें। इसके लिए हम लोगों को आन्दोलन करना होगा। इस कान्फ्रेन्स में उसकी रूपरेखा बनेगी। तो, किसी भी सभा के लिए एक सभापति की आवश्यकता होती है, सो मैं पाँच वर्ष फेल होकर छठे साल के हाईस्कूल में थर्ड डिवीजनर भाई श्री रघुपतिराघव का नाम आज की सभा के लिए प्रस्तावित करता हूँ।''

मुझे विद्यालय जाने में अत्यधिक विलम्ब हो रहा था, अत: चला आया। आगे क्या हुआ, इसका पता लगा रहा हूँ। हाँ, जब मैं आ रहा था तो 'थर्ड डिवीजनर्स जिन्दाबाद!' के गगनभेदी नारे गूँज रहे थे। एक नारा बहुत देर तक दुहराया गया :

'किसको मिले मास्टरी चाँस,
'थर्ड डिवीजन मैट्रिक पास।'

कठिन शब्दार्थ :

मवेशी = जानवर; बकलम = हस्ताक्षर; मुंड = सर; फतह = जीत; ढाठा = डंठल; खांची = टोकरी; भुसहुड़ = भूसे का ढ़ेर; हरजाना = भरपाई; चरितार्थ = हकीकत; दुत्कार = तिरस्कार; मुदर्रिसी = मास्टरी।

मुहावरे :

गोबर बारूद होना = नाकाम होना; नाक रगड़ना = गिड़गिड़ाना; हक मारना = अधिकार छीनना।

I) एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

१) कितने अनट्रेन्ड अध्यापकों का चुनाव था?
२) कितने उम्मीदवार आये थे?
३) प्रति उम्मीदवार के पीछे कितनी सिफारिशें आयी थीं?
४) ज्योतिषी कहाँ पर बैठे थे?
५) पुलिस की कितनी गाड़ियाँ आयी थीं?
६) किसका नाम सभापति के लिए प्रस्तावित किया गया?
७) 'नालायक' पाठ के लेखक कौन हैं?

II) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

१) अनट्रेंड अध्यापकों के चुनाव के माहौल का वर्णन कीजिए।
२) जिला परिषद् के बाहर का दृश्य प्रस्तुत कीजिए।
३) लाउड स्पीकर से क्या घोषणा की जा रही थी?
४) दौड़ कर आते हुए उम्मीदवार ने क्या कहा?
५) थर्ड डिवीजनरों की व्यथा को प्रकट कीजिए।

III) निम्नलिखित वाक्य किसने किससे कहे ?

१) आपका उम्मीदवार किस डिवीजन में पास है?
२) थर्ड डिवीजनर के लिए दुनिया में कोई जगह नहीं है।
३) ये लोग हम लोगों का हक मार रहे हैं।
४) हमारे लिए हर जगह दरवाजा बंद है।

IV) ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए :

१) जीवन में पहली बार सिफारिश का यह तरीका जाना।
२) सुबह का सिकुड़ा वह बालक अब तनकर जवान की तरह लग रहा था।
३) हम हरगिज़ नहीं मानते कि कागज की तीन लकीरों के कारण हम लोग नालायक हैं।
४) किसको मिले मास्टरी चाँस, थर्ड डिवीजन मैट्रिक पास।

V) निम्नलिखित वाक्यों को सूचना के अनुसार बदलिए :

१) तीन सौ अध्यापक चुने जायेंगे। (वर्तमानकाल में बदलिए)

२) सभी सिफारिशें तिरस्कृत की गईं। (भविष्यत्काल में बदलिए)

३) पुलिस लोगों की रक्षा कर रही है। (भूतकाल में बदलिए)

VI) अन्य लिंग रूप लिखिए :

शेर, अध्यापक, मास्टर, साहब, युवक।

VII) अन्य वचन रूप लिखिए :

पुस्तक, गाड़ी, लड़का, बेटियाँ।

VIII) समानार्थक शब्द लिखिए :

सम्राट, अध्यापक, स्वतंत्र, प्रयत्न, सहायता।

IX) योग्यता विस्तार :

''प्रतिभा को सिर्फ अंकों से मापा नहीं जा सकता।'' इस विषय पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

* * * * * *

९. राष्ट्र का स्वरूप

— वासुदेवशरण अग्रवाल

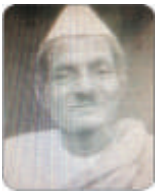

लेखक परिचय :

वासुदेवशरण अग्रवाल का जन्म १९०४ ई. में लखनऊ के एक प्रतिष्ठित वैश्य परिवार में हुआ था। आपने १९२९ में एम.ए., १९४१ में पीएच.डी., और १९४६ में डी.लिट्. की उपाधि प्राप्त की। अग्रवाल जी ने पाली, संस्कृत, अंग्रेजी आदि भाषाओं का तथा प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं पुरातत्व का गहन अध्ययन किया था। आप भारतीय साहित्य एवं संस्कृति के गंभीर अध्येता के रूप में विख्यात हैं। १९६७ ई. में आपका निधन हो गया।

आपकी प्रमुख कृतियाँ हैं — 'कल्पवृक्ष', 'पृथ्वीपुत्र', 'भारत की एकता', 'माता भूमि' आदि।

प्रस्तुत निबंध आपके 'पृथ्वी पुत्र' नामक निबंध संग्रह से लिया गया है। इस निबंध में लेखक ने यह बताया है कि 'राष्ट्र का स्वरूप' तीन तत्वों से मिलकर बनता है — भूमि, जन और संस्कृति। भूमि को माता के रूप में मानना और स्वयं को पृथ्वी का पुत्र मानना राष्ट्रीयता की भावना के उदय के लिए आवश्यक है। राष्ट्र के समग्र रूप में भूमि और जन का दृढ़ संबंध होना चाहिए। इसके साथ-साथ संस्कृति के विषय में लेखक ने मार्मिक विचार प्रकट किये हैं।

विद्यार्थियों को राष्ट्र के स्वरूप से भलीभाँति परिचित कराने एवं उनमें राष्ट्रीय भावना को जागृत करने के उद्देश्य से इस निबंध का चयन किया गया है।

भूमि

भूमि पर बसनेवाला जन और जन की संस्कृति, इन तीनों के सम्मिलन से राष्ट्र का स्वरूप बनता है।

भूमि का निर्माण देवों ने किया है, वह अनंत काल से है। उसके भौतिक रूप, सौन्दर्य और समृद्धि के प्रति सचेत होना हमारा आवश्यक कर्तव्य है। भूमि के पार्थिव स्वरूप के प्रति हम जितने अधिक जागरित होंगे उतनी ही हमारी राष्ट्रीयता बलवती हो सकेगी। यह पृथ्वी सच्चे अर्थों में समस्त राष्ट्रीय विचारधाराओं की जननी है। जो राष्ट्रीयता पृथ्वी के साथ नहीं जुड़ी वह निर्मूल होती है। राष्ट्रीयता की जड़ें पृथ्वी में जितनी गहरी होंगी उतना ही राष्ट्रीय भावों का अंकुर पल्लवित होगा। इसलिए पृथ्वी के भौतिक स्वरूप की आद्योपांत जानकारी प्राप्त करना, उसकी सुन्दरता, उपयोगिता और महिमा को पहचानना आवश्यक धर्म है।

इस कर्तव्य की पूर्ति सैकड़ों-हजारों प्रकार से होनी चाहिए। पृथ्वी से जिस वस्तु का संबंध है, चाहे वह छोटी हो या बड़ी, उसका कुशल प्रश्न पूछने के लिए हमें कमर कसनी चाहिए। पृथ्वी का सांगोपांग अध्ययन जागरणशील राष्ट्र के लिए बहुत ही आनंदप्रद कर्तव्य माना जाता है। गाँवों और नगरों में सैकड़ों केन्द्रों से इस प्रकार के अध्ययन का सूत्रपात होना आवश्यक है।

उदाहरण के लिए, पृथ्वी की उपजाऊ शक्ति को बढ़ानेवाले मेघ जो प्रतिवर्ष समय पर आकर अपने अमृत जल से इसे सींचते हैं; हमारे अध्ययन की परिधि के अंतर्गत आने चाहिए। उन मेघजलों से परिवर्द्धित प्रत्येक तृणलता और वनस्पति का सूक्ष्म परिचय प्राप्त करना ही हमारा कर्तव्य है।

इस प्रकार जब चारों ओर से हमारे ज्ञान के कपाट खुलेंगे, तब सैकड़ों वर्षों से शून्य और अंधकार से भरे हुए जीवन के क्षेत्रों में नया उजाला दिखायी देगा।

धरती माता की कोख में जो अमूल्य निधियाँ भरी हैं जिनके कारण वह वसुन्धरा कहलाती है उससे कौन परिचित न होना चाहेगा? लाखों-करोड़ों वर्षों से अनेक प्रकार की धातुओं को पृथ्वी के गर्भ में पोषण

मिला है। दिन-रात बहनेवाली नदियों ने पहाड़ों को पीस-पीसकर अगणित प्रकार की मिट्टियों से पृथ्वी की देह को सजाया है। हमारे भावी आर्थिक अभ्युदय के लिए इन सबकी जाँच-पड़ताल अत्यन्त आवश्यक है। पृथ्वी की गोद में जन्म लेनेवाले जड़-पत्थर कुशल शिल्पियों से सँवारे जाने पर अत्यन्त सौन्दर्य के प्रतीक बन जाते हैं। नाना भाँति के अनगढ़ नग विन्ध्य की नदियों के प्रवाह में सूर्य की धूप से चिलकते रहते हैं, उनको जब चतुर कारीगर पहलदार कटाव पर लाते हैं तब उनके प्रत्येक घाट से नयी शोभा और सुन्दरता फूट पड़ती है, वे अनमोल हो जाते हैं। देश के नर-नारियों के रूप-मंडन और सौन्दर्य-प्रसाधन में इन छोटे पत्थरों का भी सदा से कितना भाग रहा है; अतएव हमें उनका ज्ञान होना भी आवश्यक है।

पृथ्वी और आकाश के अंतराल में जो कुछ सामग्री भरी है, पृथ्वी के चारों ओर फैले हुए गंभीर सागर में जो जलचर एवं रत्नों की राशियाँ हैं, उन सब के प्रति चेतना और स्वागत के नये भाव राष्ट्र में फैलने चाहिए। राष्ट्र के नवयुवकों के हृदय में उन सबके प्रति जिज्ञासा की नयी किरणें जब तक नहीं फूटतीं तब तक हम सोए हुए के समान हैं।

विज्ञान और उद्यम दोनों को मिलाकर राष्ट्र के भौतिक स्वरूप का एक नया ठाट खड़ा करना है। यह कार्य प्रसन्नता, उत्साह और अथक परिश्रम के द्वारा नित्य आगे बढ़ाना चाहिए। हमारा यह ध्येय हो कि राष्ट्र में जितने हाथ हैं उनमें से कोई भी इस कार्य में भाग लिये बिना रीता न रहे। तभी मातृभूमि की पुष्कल समृद्धि और समग्र रूपमंडन प्राप्त किया जा सकता है।

जन

मातृभूमि पर निवास करनेवाले मनुष्य राष्ट्र का दूसरा अंग है। पृथ्वी हो और मनुष्य न हों, तो राष्ट्र की कल्पना असंभव है। पृथ्वी और जन दोनों के सम्मिलन से ही राष्ट्र का स्वरूप संपादित होता है। जन के कारण ही पृथ्वी मातृभूमि की संज्ञा प्राप्त करती है। पृथ्वी माता है और जन सच्चे अर्थों में पृथ्वी का पुत्र है –

(माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।)

– भूमि माता है, मैं उसका पुत्र हूँ।

जन के हृदय में इस सूत्र का अनुभव ही राष्ट्रीयता की कुंजी है। इसी भावना से राष्ट्र-निर्माण के अंकुर उत्पन्न होते हैं।

यह भाव जब सशक्त रूप में जागता है तब राष्ट्र-निर्माण के स्वर वायुमंडल में भरने लगते हैं। इस भाव के द्वारा ही मनुष्य पृथ्वी के साथ अपने सच्चे संबंध को प्राप्त करते हैं। जहाँ यह भाव नहीं है वहाँ जन और भूमि का संबंध अचेतन और जड़ बना रहता है। जिस समय भी जन का हृदय भूमि के साथ माता और पुत्र के संबंध को पहचानता है, उसी क्षण आनंद और श्रद्धा से भरा हुआ उसका प्रणाम-भाव मातृभूमि के लिए इस प्रकार प्रकट होता है—

(नमो मात्रे पृथिव्यै। नमो मात्रे पृथिव्यै।)
माता पृथ्वी को प्रणाम है। माता पृथ्वी को प्रणाम है।

यह प्रणाम-भाव ही भूमि और जन का दृढ़ बन्धन है। इसी दृढ़ भित्ति पर राष्ट्र का भवन तैयार किया जाता है। इसी दृढ़ चट्टान पर राष्ट्र का चिर जीवन आश्रित रहता है। इसी मर्यादा को मानकर राष्ट्र के प्रति मनुष्यों के कर्तव्य और अधिकारों का उदय होता है। जो जन पृथ्वी के साथ माता और पुत्र के संबंध को स्वीकार करता है, उसे ही पृथ्वी के वरदानों में भाग पाने का अधिकार है। माता के प्रति अनुराग और सेवाभाव पुत्र का स्वाभाविक कर्तव्य है। वह एक निष्कारण धर्म है। स्वार्थ के लिए पुत्र का माता के प्रति प्रेम, पुत्र के अध:पतन को सूचित करता है। जो जन मातृभूमि के साथ अपना संबंध जोड़ना चाहता है उसे अपने कर्तव्यों के प्रति पहले ध्यान देना चाहिए।

माता अपने सब पुत्रों को समान भाव से चाहती है। इसी प्रकार पृथ्वी पर बसनेवाले जन बराबर हैं। उनमें ऊँच और नीच का भाव नहीं है। जो मातृभूमि के उदय के साथ जुड़ा हुआ है वह समान अधिकार का भागी है। पृथ्वी पर निवास करनेवाले जनों का विस्तार अनंत है — नगर और जनपद, पुर और गाँव, जंगल और पर्वत नाना प्रकार के जनों से भरे हुए हैं। ये जन अनेक प्रकार की भाषाएँ बोलनेवाले और अनेक धर्मों के माननेवाले हैं, फिर भी ये मातृभूमि के पुत्र हैं और इस कारण उनका सौहार्द भाव अखण्ड है। सभ्यता और रहन-सहन की दृष्टि से जन एक-दूसरे से आगे-

पीछे हो सकते हैं किन्तु इस कारण से मातृभूमि के साथ उनका जो संबंध है उसमें कोई भेदभाव उत्पन्न नहीं हो सकता। पृथ्वी के विशाल प्रांगण में सब जातियों के लिए समान क्षेत्र है। समन्वय के मार्ग से भरपूर प्रगति और उन्नति करने का सबको एक जैसा अधिकार है। किसी जन को पीछे छोड़कर राष्ट्र आगे नहीं बढ़ सकता। अतएव राष्ट्र के प्रत्येक अंग की सुध हमें लेनी होगी। राष्ट्र के शरीर के एक भाग में यदि अंधकार और निर्बलता का निवास है तो समग्र राष्ट्र का स्वास्थ्य उतने अंश में असमर्थ रहेगा। इस प्रकार समग्र राष्ट्र को जागरण और प्रगति की एक जैसी उदार भावना से संचालित होना चाहिए।

जन का प्रवाह अनंत होता है। सहस्त्रों वर्षों से भूमि के साथ राष्ट्रीय जन ने तादात्म्य प्राप्त किया है। जब तक सूर्य की रश्मियाँ नित्य प्रात:काल भुवन को अमृत से भर देती हैं, तब तक राष्ट्रीय जन का जीवन भी अमर है। इतिहास के अनेक उतार-चढ़ाव पार करने के बाद भी राष्ट्र-निवासी जन नयी उठती लहरों से आगे बढ़ने के लिए अजर-अमर हैं। जन का संततवाही जीवन नदी के प्रवाह की तरह है, जिसमें कर्म और श्रम के द्वारा उत्थान के अनेक घाटों का निर्माण करना होता है।

संस्कृति

राष्ट्र का तीसरा अंग जन की संस्कृति है। मनुष्यों ने युग-युगों में जिस सभ्यता का निर्माण किया है वही उसके जीवन की श्वास-प्रश्वास है। बिना संस्कृति के जन की कल्पना कबंधमात्र है; संस्कृति ही जन का मस्तिष्क है। संस्कृति के विकास और अभ्युदय के द्वारा ही राष्ट्र की वृद्धि संभव है। राष्ट्र के समग्र रूप में भूमि और जन के साथ-साथ जन की संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थान है। यदि भूमि और जन अपनी संस्कृति से विरहित कर दिये जायँ तो राष्ट्र का लोप समझना चाहिए। जीवन के विटप का पुष्प संस्कृति है। संस्कृति के सौन्दर्य और सौरभ में ही राष्ट्रीय जन के जीवन का सौन्दर्य और यश अंतर्निहित है। ज्ञान और कर्म दोनों के पारस्परिक प्रकाश की संज्ञा संस्कृति है। भूमि पर बसनेवाले जन ने ज्ञान के क्षेत्र में जो सोचा है और कर्म के क्षेत्र में जो रचा है, दोनों के रूप में हमें राष्ट्रीय संस्कृति के दर्शन मिलते हैं। जीवन के विकास की युक्ति ही

संस्कृति के रूप में प्रकट होती है। प्रत्येक जाति अपनी-अपनी विशेषताओं के साथ इस युक्ति को निश्चित करती है और उससे प्रेरित संस्कृति का विकास करती है। इस दृष्टि से प्रत्येक जन की अपनी-अपनी भावना के अनुसार पृथक्-पृथक् संस्कृतियाँ राष्ट्र में विकसित होती हैं, परन्तु उन सबका मूल आधार पारस्परिक सहिष्णुता और समन्वय पर निर्भर है।

जंगल में जिस प्रकार अनेक लता, वृक्ष और वनस्पति अपने अदम्य भाव से उठते हुए पारस्परिक सम्मिलन से अविरोधी स्थिति प्राप्त करते हैं, उसी प्रकार राष्ट्रीय जन अपनी संस्कृतियों के द्वारा एक-दूसरे के साथ मिलकर राष्ट्र में रहते हैं। जिस प्रकार जल के अनेक प्रवाह नदियों के रूप में मिलकर समुद्र में एकरूपता प्राप्त करते हैं, उसी प्रकार राष्ट्रीय जीवन की अनेक विधियाँ राष्ट्रीय संस्कृति में समन्वय प्राप्त करती हैं। समन्वय- युक्त जीवन ही राष्ट्र का सुखदायी रूप है।

साहित्य, कला, नृत्य, गीत, आमोद-प्रमोद अनेक रूपों में राष्ट्रीय जन अपने-अपने मानसिक भावों को प्रकट करते हैं। आत्मा का जो विश्वव्यापी आनंद-भाव है वह इन विविध रूपों में साकार होता है। यद्यपि बाह्य रूप की दृष्टि से संस्कृति के ये बाहरी लक्षण अनेक दिखायी पड़ते हैं, किन्तु आंतरिक आनंद की दृष्टि से उनमें एकसूत्रता है। जो व्यक्ति सहृदय है, वह प्रत्येक संस्कृति के आनंद-पक्ष को स्वीकार करता है और उससे आनंदित होता है। इस प्रकार की उदार भावना ही विविध जनों से बने हुए राष्ट्र के लिए स्वास्थ्यकर है।

गाँवों और जंगलों में स्वच्छंद जन्म लेनेवाले लोकगीतों में, तारों के नीचे विकसित लोक-कथाओं में संस्कृति का अमित भंडार भरा हुआ है, जहाँ से आनंद की भरपूर मात्रा प्राप्त हो सकती है। राष्ट्रीय संस्कृति के परिचयकाल में उन सबका स्वागत करने की आवश्यकता है।

पूर्वजों ने चरित्र और धर्म-विज्ञान, साहित्य, कला और संस्कृति के क्षेत्र में जो कुछ भी पराक्रम किया है उस सारे विस्तार को हम गौरव के साथ धारण करते हैं और उसके तेज को अपने भावी जीवन में साक्षात् देखना चाहते हैं। यही राष्ट्र संवर्धन का स्वाभाविक प्रकार है। जहाँ अतीत वर्तमान के लिए भाररूप नहीं है, जहाँ भूत वर्तमान को जकड़ नहीं रखना

चाहता वरन् अपने वरदान से पुष्टि करके उसे आगे बढ़ाना चाहता है, उस राष्ट्र का हम स्वागत करते हैं।

कठिन शब्दार्थ :

बलवती = बलिष्ठ; आद्योपांत = आरंभ से अंत तक; सांगोपांग = पूर्ण रूप से; परिवर्द्धित = जिसमें वृद्धि हुई हो; अभ्युदय = उन्नति, वृद्धि; अनगढ़ = बेडौल; तादात्म्य = एकत्व समर्पण; संततवाही = निरंतर, सदा; कबंध = सिर रहित धड़; विटप = पेड़, वृक्ष; संवर्धन = उन्नति करना।

I) एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

१) किनके सम्मिलन से राष्ट्र का स्वरूप बनता है?
२) किसकी कोख में अमूल्य निधियाँ भरी हैं?
३) सच्चे अर्थों में पृथ्वी का पुत्र कौन है?
४) पुत्र का स्वाभाविक कर्तव्य क्या है?
५) माता अपने सब पुत्रों को किस भाव से चाहती है?
६) राष्ट्र का तीसरा अंग कौन-सा है?
७) राष्ट्र की वृद्धि किसके द्वारा संभव है?
८) राष्ट्र का सुखदायी रूप क्या है?
९) संस्कृति का अमित भंडार किसमें भरा हुआ है?
१०) 'राष्ट्र का स्वरूप' पाठ के लेखक कौन हैं?

II) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

१) राष्ट्र को निर्मित करनेवाले तत्वों का वर्णन कीजिए।
२) धरती 'वसुंधरा' क्यों कहलाती है?
३) राष्ट्र निर्माण में जन का क्या योगदान होता है?
४) लेखक ने संस्कृति को जीवन-विटप का पुष्प क्यों कहा है?
५) समन्वययुक्त जीवन के संबंध में वासुदेवशरण अग्रवाल के विचार प्रकट कीजिए।

III) ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए :

१) भूमि माता है, मैं उसका पुत्र हूँ।
२) यह प्रणाम भाव ही भूमि और जन का दृढ़ बंधन है।
३) जन का प्रवाह अनंत होता है।
४) संस्कृति ही जन का मस्तिष्क है।
५) उन सबका मूल आधार पारस्परिक सहिष्णुता और समन्वय पर निर्भर है।

IV) निम्नलिखित वाक्य सूचनानुसार बदलिए :

१) हमारे ज्ञान के कपाट खुलते हैं। (भविष्यत्काल में बदलिए)
२) माता अपने सब पुत्रों को समान भाव से चाहती थी। (वर्तमान काल में बदलिए)
३) मनुष्य सभ्यता का निर्माण करेगा। (भूतकाल में बदलिए)

V) कोष्ठक में दिए गए कारक चिन्हों से रिक्त स्थान भरिए :

(पर, का, के, में)

१) जन ..... प्रवाह अनंत होता है।
२) जीवन नदी ..... प्रवाह की तरह है।
३) पृथ्वी के गर्भ ..... अमूल्य निधियाँ हैं ।
४) भूमि ..... जन निवास करते हैं।

VI) समानार्थक शब्द लिखिए :

अंबर, धरती, पेड़, नारी, सूर्य।

VII) विलोम शब्द लिखिए :

प्रसन्न, उत्साह, अमृत, स्वाभाविक, जन्म, ज्ञान।

VIII) योग्यता विस्तार :

भारत की विभिन्न संस्कृति एवं रीति-रिवाजों के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए।

* * * * * *

१०. रिहर्सल

– ओमप्रकाश 'आदित्य'

लेखक परिचय :

हिन्दी साहित्य जगत के प्रसिद्ध हास्य-व्यंग्य रचनाकार ओमप्रकाश 'आदित्य' का जन्म ५ नवम्बर १९३६ को रणसीका, गुड़गाँव (हरियाणा) में हुआ। आपने दिल्ली विश्वविद्यालय से एम.ए. (हिन्दी) की उपाधि प्राप्त की। गंभीर कविताओं से प्रारंभ करके हास्य-व्यंग्य के क्षेत्र में अवतरित होने वाले 'आदित्य' जी ने आज कवि के रूप में हिन्दी मंच को और निबंधकार के रूप में पाठक वर्ग को पूरी तरह जकड़ लिया है। हास्य-एकांकी लेखन के क्षेत्र में भी आपने अपने जौहर दिखाए हैं। सन् १९६० में लालकिले का कवि-सम्मेलन आपके जीवन का प्रथम कवि-सम्मेलन था। आपकी हास्य-व्यंग्य रचनाएँ हिन्दी की विशिष्ट पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुईं। आपकी प्रमुख कृतियों में, 'थर्ड डिवीजन', 'इधर भी गधे हैं, उधर भी गधे हैं', 'तोता एंड मैना', 'उल्लू का इंटरव्यू', 'माडर्न शादी', 'घट-घट व्यापी भ्रष्टाचार', 'गौरी बैठी छत पर' आदि सम्मिलित हैं। आपकी मृत्यु ८ जून २००९ को भोपाल के नज़दीक कार दुर्घटना में हुई।

प्रस्तुत एकांकी 'श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य एकांकी' – काका हाथरसी, डॉ.गिरिराज शरण अग्रवाल से संकलित की गई है। इस एकांकी में वैद्य परमानन्द तथा प्रोफेसर पांडुरंग अनोखे ढंग से मरीजों का इलाज करते हैं। रमेश के बेहोशी के अभिनय ने एकांकी को न सिर्फ हास्य-व्यंग्य से सराबोर किया है बल्कि वैद्य और प्रोफेसर की सच्चाई को भी भलीभाँति उजागर किया है।

हास्य-व्यंग्य के साथ-साथ विद्यार्थियों को विषय से अवगत कराने के उद्देश्य से 'रिहर्सल' एकांकी चयनित है।

पात्र —

एक बीमार स्त्री
वैद्य परमानन्द
किसान
अध्यापक
प्रोफेसर पांडुरंग
एक बालक
बालक के पिता, माता आदि।

(वैद्य परमानन्द का कमरा। वैद्य जी एक कुर्सी पर बैठे हैं। आगे पुरानी-सी एक मेज है। मेज पर कलम, दवात और कागज बेतरतीब बिखरे पड़े हैं। एक लम्बी शीशी रखी है जिसके लेबिल पर मोटे अक्षरों में 'अमर भास्कर चूर्ण' लिखा है। दायीं ओर एक बेंच है। परमानन्द एक पुरानी मोटी पुस्तक पढ़ने में व्यस्त हैं। आयु लगभग पचास वर्ष। आँखों पर चश्मा, लम्बी दाढ़ी, झुर्रीदार मूँछे हैं। एक अधेड़ उम्र की मॉडर्न ढ़ंग से सजी स्त्री आती है और आकर बेंच पर बैठ जाती है।)

स्त्री : मैं बीमार हूँ वैद्य जी !

परमानन्द : बीमार हो तभी तो यहाँ चली आयीं, नहीं तो क्यों आतीं! बीमारी का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

स्त्री : मेरा दिल धड़कता है (पहले दिल के दायीं ओर हाथ रखती है, फिर संभलकर बायीं ओर रखते हुए)

परमानन्द : इस उम्र में? लक्षण अच्छे नहीं हैं। हार्ट फेल हो सकता है।

स्त्री : सदा घबराहट महसूस करती हूँ !

परमानन्द : यही तो मौत की निशानी है।

स्त्री : (और घबराकर) नींद बहुत कम आती है।

परमानन्द : (किताब बन्द कर मेज पर रखते हुए) आपका बचना मुश्किल है बहिन जी! नब्ज दिखाइये।

स्त्री : (हाथ आगे बढ़ाते हुए) मेरी रक्षा कीजिए वैद्य जी, मैं अभी मरना नहीं चाहती।

परमानन्द : (नब्ज पकड़ते हुए) मरना तो कोई नहीं चाहता, लेकिन

मैंने अपने रोगियों को अक्सर मरते देखा है। आपको सपने भी आते हैं?

स्त्री : जी! कभी-कभी।

परमानन्द : सपने में भूत भी दिखाई देते होंगे?

स्त्री : (घबराकर सिर हिलाते हुए) भूत तो कभी नहीं...

परमानन्द : (नब्ज छोड़कर) आज दिखाई देंगे, ध्यान से देखियेगा।

स्त्री : आप मेरा कुछ इलाज कीजिए वैद्य जी।

परमानन्द : हृदय के भीतरी भाग पर चंदन का लेप कीजिए।

स्त्री : (आश्चर्य से) भीतरी भाग पर?

परमानन्द : (शीशी से स्त्री के हाथ पर चूर्ण उड़ेलते हुए) जी! यह अमर भास्कर ले जाइये। इसे इस तरह से खाइये कि पेट में न जाकर सीधा हृदय में जाये।

स्त्री : कोई परहेज भी है वैद्य जी?

परमानन्द : परहेज ही तो असली इलाज है। आप पन्द्रह दिन तक खाना मत खाइये।

स्त्री : पन्द्रह दिन तक?

परमानन्द : हाँ, दस दिन तक पानी मत पीजिए।

स्त्री : वैद्य जी, पानी.....।

परमानन्द : मेरा मतलब ठंडा पानी मत पीजिए, उबालकर पीजिए।

(एक किसान द्वार पर आकर खड़ा हो जाता है।)

स्त्री : वैद्य जी, फिर कब आऊँ आपकी शरण में ?

परमानन्द : कभी भी आइये, वैसे परमानन्द के पास जो एक बार होकर जाता है दोबारा लौटकर नहीं आता।

(स्त्री भयभीत मुद्रा में बनावटी हँसी हँसकर प्रस्थान करती है।)

किसान : (द्वार से ही हाथ जोड़कर परमानन्द की ओर आते हुए) राम-राम वैद्य जी !

परमानन्द : (ध्यानपूर्वक किसान को देखते हुए) राम-राम! आओ भाई! तुम तो बीमार दिखाई देते हो।

किसान : (बेंच पर बैठते हुए) वैद्य जी। मैं नही, मेरी गाय बीमार है। दस दिन से न चारा खाती है न दूध देती है।

परमानन्द : तुम बीमार हो या तुम्हारी गाय, मेरे लिए एक ही बात है।

लाओ नब्ज दिखाओ।

किसान : जी, नब्ज मैं दिखाऊँ?

परमानन्द : और कौन दिखायेगा? गाय तुम्हारी बीमार है या किसी और की? (नब्ज देखते हुए) गाय की हालत तो बहुत चिंताजनक है भाई। उसे शीघ्र चारा खिलाओ नहीं तो मरे बिना नहीं मानेगी।

किसान : वैद्य जी, यही तो रोग है उसे। वह चारा नहीं खाती।

परमानन्द : अच्छा! (सोचकर) उसे उसीका दूध निकालकर पिलाओ।

किसान : वह दूध देती ही नहीं वैद्य जी !

परमानन्द : तुम पिलाओगे तो अवश्य देने लगेगी। (शीशी उठाकर) यह अमर भास्कर चूर्ण ले जाओ, गर्म पानी के साथ खा लेना।

किसान : जी? मैं खाऊँ या गाय को खिलाऊँ?

परमानन्द : (चूर्ण किसान के हाथ पर डालते हुए) तुम भी खा लेना, गाय को भी खिला देना। दोनों को लाभ पहुँचेगा।

(तेजी से हाँफते हुए एक अध्यापक का प्रवेश। उम्र पैंतालीस, कुर्ता-पायजामा, जवाहरकट, पाँव में साधारण चप्पल, कई दिन से शेव नहीं हुई दाढ़ी-मूँछ।)

अध्यापक : वैद्य जी! शीघ्र चलिये। मेरा लड़का बेहोश हो गया है।

(किसान राम-राम करके प्रस्थान करता है।)

परमानन्द : आपका लड़का कितना बड़ा है उम्र में?

अध्यापक : जी काफी बड़ा है।

परमानन्द : आपसे तो छोटा ही होगा।

अध्यापक : जी... मेरा तो लड़का ही है।

परमानन्द : नहीं, कई बेटे अपने बाप से भी बड़े हो जाते हैं। आप क्या काम करते हैं?

अध्यापक : जी, काम तो कुछ नहीं करता, अध्यापक हूँ।

परमानन्द : मैं भी तो पहले अध्यापक था। मेरे पढ़ाये हुए बच्चे जानवरों से भी ज्यादा समझदार होते थे।

अध्यापक : वैद्य जी! जल्दी चलिए, यह बातों का समय नहीं है, मेरा लड़का...।

परमानन्द : (उठते हुए) चलिये, चलिये, यह अमर भास्कर चूर्ण की शीशी उठा लीजिये।

(अध्यापक शीशी उठाता है। दोनों का शीघ्रता से प्रस्थान।)

दूसरा दृश्य

(प्रोफेसर पांडुरंग का कमरा। पांडुरंग कुर्सी पर बैठे हैं। मेज के एक कोने पर तीन पुस्तकें ऊपर-नीचे रखी हैं। वे दीवार पर नजर गड़ाये कुछ सोचने में व्यस्त हैं। उम्र बयालीस वर्ष। दाढ़ी फ्रेंचकट, मूँछे साफ, आँखों पर मोटे फ्रेम का काला चश्मा, काला सूट और काली टाई पहने हैं।
वही स्त्री आकर सामने की कुर्सी पर बैठ जाती है।)

स्त्री : मैं बीमार हूँ प्रोफेसर साहब!

प्रोफेसर : आपको भ्रम हो गया है, आप बीमार नहीं हैं।

स्त्री : मेरा हृदय धड़कता है।

प्रोफेसर : हृदय तो मेरा भी धड़कता है, दुनिया में हर आदमी का धड़कता है। इसमें नयी बात क्या है? हृदय का गुण ही धड़कना है।

स्त्री : घबराहट बहुत रहती है।

प्रोफेसर : यह आपके दिल की कमजोरी है, बीमारी नहीं।

स्त्री : यह कमजोरी कैसे दूर हो सकती है?

प्रोफेसर : हिम्मत से। अभी ठीक किये देता हूँ। आप सीधी होकर बैठिये।

(स्त्री सतर्क होकर बैठती है।)

प्रोफेसर : आँखें मूँद लीजिए।

(स्त्री आँखें मूँदती है।)

अब आप कहाँ हैं?

स्त्री : आपकी दुकान में।

प्रोफेसर : ना, आप बीहड़ जंगल में हैं, मेरी दुकान में नहीं।

स्त्री : लेकिन यह तो आपकी दुकान है।

प्रोफेसर : ना, महसूस कीजिए कि आप घने जंगल में हैं। हैं न आप जंगल में!

स्त्री : (सकपकाकर) जी.. जी.... हूँ।

प्रोफेसर : (पहले धीमे, फिर धीरे-धीरे तेज स्वर में) भयानक जंगल, पेड़ों का अंधेरा, हाथियों का चिंघाड़, शेरों की दहाड़, और फिर... सन्नाटा।

स्त्री : (घबराकर) जी... जी.... प्रोफेसर साहब।

प्रोफेसर : शेर आपको देखकर दहाड़ता हुआ, छलाँग लगाकर आपकी ओर बढ़ रहा है, उसकी आँखे जल रही हैं। नाखून कटार की तरह, दाँत बिजली की तरह....।

स्त्री : (घबराहट और रुदन के स्वर में) जी... जी...जी...

प्रोफेसर : घबराइये मत, आँखें मत खोलिये, आप शेर से लड़िये। मैं आपको जिताऊँगा। लड़िये, लड़िये, लड़िये,आप लड़ रही हैं ना?

स्त्री : (घबराई आवाज में) जी, लड़ रही हूँ।

प्रोफेसर : (हवा में घूँसा चलाते हुए) अब इसे घूँसे से मार दीजिए। उसके मुँह में हाथ डालकर उसके दाँत तोड़ दीजिए। जल्दी कीजिये।
(थोडी देर रुककर) अभी मारा या नहीं?

स्त्री : (फूली साँस से) जी, मार दिया।

(आँखें खोलकर घबरायी नजर से इधर-उधर देखती है। द्वार पर किसान अभी आया है। उसे देखकर उचक पड़ती है – जैसे शेर दिखाई दे गया हो।)

प्रोफेसर : इसी तरह आप तूफान आये समुद्र में कूदिये, दुर्गम पहाड़ों पर चढ़िये, चम्बल की घाटी में डाकुओं का सामना कीजिए। आप का दिल लोहे की तरह मजबूत हो जायेगा।

स्त्री : पांडुरंग जी! मुझे डर है कि कहीं यहाँ बैठे-बैठे मेरा दिल धड़कना बंद न कर दे। मैं चलती हूँ, नमस्ते !
(झटके के साथ उठकर तेजी से जाती है।)

प्रोफेसर : (एक ही साँस में) रास्ते-भर आँखें मूँदकर महसूस

करती जाइये कि आप रानी लक्ष्मीबाई की तरह लड़ाई के मैदान में तलवार चलाती हुई बढ़ रही हैं।

किसान : (प्रवेश करते हुए) राम-राम परोफेसर जी?

प्रोफेसर : एक बात पहले ही ध्यान से सुन लो।

किसान : (पास आकर) क्या परोफेसर जी?

प्रोफेसर : तुम्हें किसी तरह की कोई बीमारी नहीं है।

किसान : मैं तो आपकी दुआ से आज तक कभी बीमार हुआ ही नहीं, पिछले दस दिनों से मेरी गाय बीमार है।

प्रोफेसर : गाय बीमार है तो तुम किसलिए आये हो? गाय का इलाज क्या तुम्हारी शक्ल देखकर करूँ?

किसान : जी, वो न चारा खाती है न दूध देती है।

प्रोफेसर : गाय का चेहरा देखे बिना हम कुछ नहीं कह सकते। कल उसका चेहरा लेकर आना, फिर फेस रीडिंग करके बीमारी बतायेंगे।

किसान : परोफेसर जी! चेहरा कैसे लाया जा सकता है, गाय को ही ले आऊँगा।

प्रोफेसर : (गुस्से से) गाय को ले आओगे! यह दुकान है या गौशाला? गाय का एक फोटो खिंचवाकर ले आना। जाओ, मेरा समय नष्ट मत करो।

(सत्रह-अट्ठारह वर्ष की एक लड़की का प्रवेश)

लड़की : प्रोफेसर साहब! चलिये, जल्दी चलिये, मेरा भाई बेहोश हो गया है।

प्रोफेसर : किस तरह?

लड़की : एक घंटे से न बोलता है, न हिलता-डुलता है।

प्रोफेसर : यह कोई खास बीमारी नहीं है।

लड़की : कुछ लोग कहते हैं सन्निपात है।

प्रोफेसर : बिलकुल नहीं। सन्निपात उनको है जो ऐसा कहते हैं।

लड़की : एक डाक्टर ने डिप्थीरिया बताया है।

प्रोफेसर : ऐसे डाक्टर को बुलाया ही क्यों आपने?

लड़की : जल्दी चलिये प्रोफेसर जी, मेरा दिल काँप रहा है।

प्रोफेसर : यह आपके दिल की कमजोरी है, डिप्थीरिया नहीं।

लड़की : डिप्थीरिया मुझको नहीं मेरे भाई को है। आप जल्दी चलिये।
प्रोफेसर : (बेंत उठाकर उठते हुए) चलिये, चलिये, घबराइये मत।
लड़की : आपका बैग?
प्रोफेसर : मेरे दिमाग में है।

(दोनों का प्रस्थान)

तीसरा दृश्य

(अध्यापक का घर। बारह वर्षीय लड़का खाट पर अचेत पड़ा है। सिरहाने की ओर वैद्य परमानन्द बैठे हैं, पैताने की ओर लड़के का पिता। लड़के की माँ वैद्य जी के पास चिन्तित मुद्रा में खड़ी है।)

माँ : वैद्य जी! मेरे लड़के को बचाइये, नहीं तो मैं मर जाऊँगी।
परमानन्द : निश्चिंत रहिये! जब तक मैं दवाई न दूँ, यहाँ कोई नहीं मर सकता।
माँ : वैद्य जी किसी तरह इसे होश में लाइये, यह मेरा इकलौता पुत्र है।
परमानन्द : मैं भी अपने छोटे भाइयों के पैदा होने से पूर्व अपनी माँ का इकलौता पुत्र था, लेकिन इतनी बुरी तरह कभी बेहोश नहीं हुआ।
पिता : इसे क्या हो गया है वैद्य जी?
परमानन्द : यह बेहोश हो गया है।
माँ : यह ठीक हो जायेगा न वैद्य जी!
परमानन्द : ठीक तो हो जायेगा, पर होश में नही आयेगा।
माँ : (सिसकी लेते हुए) वैद्य जी !
पिता : ऐसा मत कहिये वैद्य जी, हम आपकी शरण में हैं!

(प्रोफेसर पांडुरंग तथा लड़की का प्रवेश)

लड़की : वैद्य जी भी बैठे हैं प्रोफेसर साहब। पिता जी मुझसे पहले ही वैद्य जी को बुला लाये।
प्रोफेसर : (आगे बढ़कर वैद्य परमानन्द की ओर देखते हुए) कौन? वैद्य परमानन्द! यमराज का सगा भाई!

परमानन्द : और तुम्हारा चाचा। प्रोफेसर पांडुरंग, तुम वात-पित्त -कफ की तरह एक साथ ही क्यों चले आ रहे हो?

प्रोफेसर : इसलिए कि तुम रोगी की नब्ज पकड़कर उसकी जान न ले लो।

(पांडुरंग दूसरी ओर सिरहाने बैठते हैं।)

पिता : इसकी डेढ़ घंटे से यही हालत है प्रोफेसर जी!

प्रोफेसर : मुझे इसका चेहरा देखने दीजिए।

परमानन्द : चेहरा देखकर इसकी तस्वीर बनाओगे?

प्रोफेसर : चुप रहिये आप, मुझे सोचने दीजिए।

परमानन्द : चुप रहेगा वह जो बेहोश है, मैं चुप नहीं रह सकता। मुझे इसका इलाज करना है।

पिता : जल्दी कीजिए वैद्य जी।

माँ : वैद्य जी, इसे ऐसी जड़ी सुँघाइये कि यह अभी खड़ा होकर बातें करने लगे।

परमानन्द : घर में देशी घी है?

माँ : गाय का है वैद्य जी।

परमानन्द : गाय का हो या बैल का, घी होना चाहिए।

प्रोफेसर : घी का क्या कीजियेगा?

परमानन्द : प्रोफेसर पांडुरंग की खोपड़ी पर मलूँगा, जिससे उसका दिमाग ठीक काम करे।

प्रोफेसर : देखिये, आपके लड़के को कोई बीमारी नहीं है। आप परमानन्द जी की बातों में मत आइये।

परमानन्द : इनकी बातों में मत आइये जिससे ये ऊटपटांग बातें करके इसे डबल बेहोश कर दें।

प्रोफेसर : कौन कहता है कि यह बेहोश है?

परमानन्द : सुनिये...

माँ : डॉक्टर जी! यह बेहोश नहीं है तो फिर बोलता क्यों नही?

प्रोफेसर : इसे आप एकान्त में लिटाइये।

पिता : जा।

प्रोफेसर : और इससे कहिये कि महसूस करे कि बेहोश नहीं है।

परमानन्द : और इस लड़के से यह भी कह दीजिए कि जब तक होश

में न आ जाये, तब तक इस प्रोफेसर की बातों पर ध्यान न दे।

माँ : वैद्य जी! डाक्टर जी! मेरे बच्चे का ख्याल कीजिए। इसे कुछ दवा-दारू दीजिए।

परमानन्द : यह लीजिये अमर भास्कर चूर्ण। होश में आने पर इसे गर्म पानी के साथ खिला दीजिए।

पिता : (खीझकर) पहले इसे होश में लाने की दवा तो दीजिए।

प्रोफेसर : इसे ऐसी-ऐसी कहानियाँ सुनाइये जिनमें बेहोश व्यक्तियों के होश में आने का वर्णन हो।

माँ : यह बेहोश है, आपको कहानियों की सूझ रही है।

प्रोफेसर : यह बेहोश नहीं है।

परमानन्द : तो क्या है?

प्रोफेसर : इसे भ्रम हो गया है कि यह बेहोश है। असल में यह होश में ही है।

माँ : आप कैसी बातें कर रहे हैं डॉक्टर जी। इन बातों से तो आप हमें भी बेहोश कर देंगे।

प्रोफेसर : इसी को स्नायुरोग कहते हैं। आप सब इससे कहिये कि यह होश में है।

परमानन्द : तुम्हारा सर होश में है। यह तो खूब बेहोश है।

प्रोफेसर : मैं कहता हूँ यह होश में है।

परमानन्द : इसकी नब्ज बता रही है कि यह बेहोश है।

प्रोफेसर : इसका चेहरा कह रहा है कि यह होश में है।

पिता : वैद्य जी, आप लड़िये मत।

माँ : मेरे बच्चे का ख्याल कीजिए।

परमानन्द : यह बेहोश है, इसका बचना मुश्किल है।

प्रोफेसर : यह होश में है, इसका मरना मुश्किल है।

परमानन्द : मैं इसे अमर भास्कर चूर्ण दूँगा, यह बेहोश है।

प्रोफेसर : बेहोश तुम हो, यह नहीं।

परमानन्द : होश में तुम हो, यह नहीं।

प्रोफेसर : इसे स्नायुरोग है।

परमानन्द : इसे सन्निपात है।

माँ : हाय राम! ये तो रोग पर रोग बढ़ाये जा रहे हैं।
(लड़का चद्दर फेंककर उठता है, सब चौंक पड़ते हैं।)

लड़का : सन्निपात है वैद्य परमानन्द को और स्नायुरोग है प्रोफेसर पांडुरंग को। मैं पूरी तरह होश में हूँ। न मुझे भ्रम है और न कुछ महसूस करने की जरूरत।

पिता : (आश्चर्य से) रमेश!

माँ : (दौड़कर उसे अंक में भरती हुई) मेरा लाल! तुझे क्या हो गया था मेरे लाड़ले!

रमेश : कुछ नहीं माँ, स्कूल में परसों एक नाटक होने जा रहा है। मुझे उसमें दो घंटे की बेहोशी का अभिनय करना है। उसीकी रिहर्सल कर रहा था।

माँ : (रमेश की पीठ पर दोनों हाथ मारकर) अरे, आग लगे तेरी रिहर्सल को। तू बीस-तीस मिनट और ऐसे ही रहता तो मेरी रिहर्सल हो जाती। चल तेरे लिए हलवा बनाती हूँ। तू भगवान के घर से लौटकर आया है।

(लड़का अपनी माँ के साथ भीतर प्रवेश करता है। पीछे-पीछे लड़के का पिता और बहन भी जाते हैं। वैद्य जी और प्रोफेसर खड़े होकर एक-दूसरे का कंधा पकड़े हुए उनकी ओर आश्चर्य से देखते हैं।)

प्रोफेसर : मैंने कहा था न कि यह लड़का होश में है।

परमानन्द : (उसी ओर देखते हुए) मैंने भी बचपन में एक बार बेहोशी की रिहर्सल की थी पर इस तरह होश में नहीं आया था।

(शीशी हाथ से गिरती है, परमानन्द लड़खड़ाकर गिरते हैं। पांडुरंग उन्हें बार-बार कमर में हाथ डालकर उठाते हैं।

प्रोफेसर :(उठाते हुए) आप गिर नहीं रहे हैं वैद्य जी। आप गिर नहीं रहे हैं। आप महसूस कीजिए कि नहीं गिर रहे हैं, महसूस कीजिए, कीजिए... कीजिए..।

(पटाक्षेप)

कठिन शब्दार्थ :

नब्ज = नाड़ी, रक्त वाहिनी शिराएँ; परहेज = हानिकारक एवं अहितकर वस्तुओं का सेवन न करना; बीहड़ = विषम, घना, ऊबड़-खाबड़; पैताने = वह दिशा जिधर पैर फैलाकर सोया जाए; अंक में भरना = गले लगाना, लिपटाना।

I) एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

१) वैद्य परमानन्द बीमार स्त्री को कितने दिन तक खाना न खाने के लिए कहते हैं?
२) किसान किसकी बीमारी के इलाज के लिए वैद्य परमानन्द के पास पहुँचता है?
३) वैद्य परमानन्द हर बीमारी के लिए कौन-सी दवा देते हैं?
४) प्रोफेसर पांडुरंग बीमार स्त्री को कमजोरी दूर करने का क्या उपाय बताते हैं?
५) प्रोफेसर पांडुरंग किसान को किसका फोटो लाने के लिए कहते हैं?
६) प्रोफेसर पांडुरंग किसे यमराज का सगा भाई कहते हैं?
७) प्रोफेसर पांडुरंग लड़के को होश में लाने के लिए कैसी कहानियाँ सुनाने की सलाह देते हैं?
८) वैद्य परमानंद के अनुसार लड़के को क्या हुआ है?
९) बेहोशी का अभिनय किसने किया?
१०) बेहोशी का अभिनय करने वाले लड़के का नाम लिखिए।

II) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

१) वैद्य परमानंद बीमार स्त्री का इलाज किस प्रकार करते हैं?
२) वैद्य परमानंद गाय की बीमारी दूर करने का क्या उपाय बताते हैं?
३) प्रोफेसर पांडुरंग बीमार स्त्री का इलाज किस ढंग से करते हैं?
४) वैद्य और प्रोफेसर के आमने-सामने आने के बाद का दृश्य प्रस्तुत कीजिए।
५) रमेश ने बेहोशी का अभिनय क्यों किया?
६) वैद्य परमानंद का चरित्र-चित्रण कीजिए।
७) प्रोफेसर पांडुरंग का चरित्र-चित्रण कीजिए।

III) निम्नलिखित वाक्य किसने किससे कहे ?

१) परहेज ही तो असली इलाज है।
२) तुम भी खा लेना, गाय को भी खिला देना।
३) नहीं, कई बेटे अपने बाप से भी बड़े हो जाते हैं।
४) ठीक तो हो जायेगा, पर होश में नहीं आयेगा।
५) तुझे क्या हो गया था मेरे लाड़ले।

IV) ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए :

१) मरना तो कोई भी नहीं चाहता, लेकिन मैंने अपने रोगियों को अक्सर मरते देखा है।
२) हृदय का गुण ही धड़कना है।
३) मुझे डर है कि कहीं यहाँ बैठे-बैठे मेरा दिल धड़कना बंद न कर दे।
४) इसे भ्रम हो गया है कि यह बेहोश है।
५) सन्निपात है वैद्य परमानंद को और स्नायुरोग है प्रोफेसर पांडुरंग को।

V) अन्य लिंग रूप लिखिए :

हाथी, शेर, लड़का, गाय, पिता, अध्यापक, भगवान।

VI) अन्य वचन रूप लिखिए :

दुकान, घंटा, किताब, मूँछ, मुद्रा, सपना।

VII) विलोम शब्द लिखिए :

बेहोश, मोटा, मौत, शीघ्र, छोटा।

VIII) योग्यता विस्तार :

डॉ. रामकुमार वर्मा, काका हाथरसी, चिरंजीत, उपेन्द्रनाथ अश्क आदि लेखकों की एकांकियों को पढ़िए।

* * * * * *

द्वितीय सोपान

पद्य भाग

अ) मध्ययुगीन काव्य

१. कबीरदास के दोहे

कवि परिचय :

संत काव्यधारा के सर्वाधिक प्रतिभाशाली एवं भक्तिकालीन निर्गुण भक्ति के प्रवर्तक कबीरदास का जन्म काशी में सन् १३९९ में हुआ। नीरू एवं नीमा नामक जुलाहा दम्पति ने आपका पालन-पोषण किया। कबीर अनपढ़ थे किन्तु वे आत्मज्ञानी थे। रामानन्द जी की शिक्षाओं से प्रभावित कबीरदास जी को कुछ लोग रामानन्द का ही शिष्य मानते हैं। एक दूसरा मत उन्हें सूफी-सिद्धान्त के प्रतिपादक शेख तकी का शिष्य मानता है। 'कहु कबीर मैं सो गुरु पाया, जाका नाम विवेक रे' के आधार पर कुछ लोगों का मत है कि कबीरदास जी किसी व्यक्ति के शिष्य नहीं थे। आपने हिन्दू-मुस्लिम एकता, भौतिक एवं आत्मिक परिष्कार, शुद्ध प्रेम, सच्चाई, सादगी आदि पर बल दिया। आपकी मृत्यु सन् १५१८ में मगहर नामक स्थान में हुई।

कबीरदास की रचनाएँ तीन भागों में विभक्त हैं – साखी, सबद और रमैनी जो 'बीजक' नामक ग्रंथ में संकलित हैं। कबीर की भाषा को प्राय: 'खिचड़ी भाषा' या 'सधुक्कड़ी भाषा' कहा जाता है जिसमें ब्रज, अवधी, राजस्थानी, अरबी, फारसी आदि के शब्द पाये जाते हैं। आप के प्रमुख शिष्य धर्मदास जी ने 'बीजक' का संग्रह किया था।

प्रस्तुत दोहों में कबीर ने गुरु-महिमा, शरीर की नश्वरता, परमात्मा की सर्वव्यापकता, भक्तिभावना एवं नीतिपरक उपदेश आदि गुणों पर प्रकाश डाला है।

सद्गुरु के परताप तैं मिटि गया सब दु:ख दर्द।
कह कबीर दुविधा मिटी, गुरु मिलिया रामानंद॥ १॥

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूँ पायँ।
बलिहारी गुरु आपने, जिन गोविन्द दियो बताय ॥ २॥

माटी कहै कुम्हार से, तू क्या रौंदे मोय।
इक दिन ऐसो होयगो, मैं रौंदुँगी तोय॥ ३॥

निन्दक नियरे राखिये, आँगन कुटी छबाय।
बिन पानी, साबुन बिना निर्मल करै सुभाय॥ ४॥

कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढे बन मांहि।
ऐसे घटि घटि राम हैं, दुनिया देखै नांहि॥ ५॥

बहुत दिनन की जोवती, बाट तुम्हारी राम।
जिव तरसै तुझ मिलन कूँ, मनि नाहीं विश्राम॥ ६॥

जहाँ दया तहँ धर्म है, जहाँ लोभ तहँ पाप।
जहाँ क्रोध तहँ काल है, जहाँ छिमा तहँ आप॥ ७॥

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब्ब।
पल में परलै होयगा, बहुरि करैगा कब्ब॥ ८॥

दु:ख में सुमिरन सब करै, सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करै, तो दु:ख काहे होय॥ ९॥

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिये ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान॥ १०॥

कठिन शब्दार्थ :

परताप = तेज, प्रभुत्व; तें = से; दुविधा = संशय, असमंजस; काके = किसके; बलिहारी = न्योछावर होना, कुरबान होना; दोऊ = दोनों; माटी = मिट्टी; रौंदना = पैरों से कुचलना, दबाना; मोये = मुझे; तोये = तुझे; नियरे = पास में; छबाय = बनाकर; सुभाय = स्वभाव; कुंडली = नाभि; मृग = हिरन; जोवती = राह देखना, इंतजार करना; जिव = प्राण; कूँ = के लिए; काल = मृत्यु; काल = कल; परलय = प्रलय, सर्वनाश; बहुरि = फिर; सुमिरन = स्मरण; काहे = क्यों; ग्यान = ज्ञान; म्यान = तलवार रखने का कोष।

I एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

१) किसके प्रताप से सब दु:ख दर्द मिटते हैं?
२) कबीर के गुरू कौन थे?
३) कबीर किस पर बलिहारी होते हैं?
४) माटी कुम्हार से क्या कहती है?
५) किसको पास रखना चाहिए ?
६) कस्तूरी कहाँ बसती है?
७) कबीर किसकी राह देखते हैं?
८) क्रोध किसके समान है?
९) दु:ख में मनुष्य क्या करता है?
१०) कबीरदास के अनुसार किसकी जाति नहीं पूछनी चाहिए?

II निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

१) गुरु की महिमा के बारे में कबीर क्या कहते हैं?
२) जीवन की नश्वरता के बारे में कबीर के क्या विचार हैं?
३) दया और धर्म के महत्व का वर्णन कीजिए।
४) समय के सदुपयोग के बारे में कबीर क्या कहते हैं?
५) कबीर के अनुसार ज्ञान का क्या महत्व है?

III ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए :

१) माटी कहै कुम्हार से, तू क्या रौंदे मोय।
इक दिन ऐसो होयगो, मैं रौंदुँगी तोय॥

२) कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढे बन मांहि।
ऐसे घटि घटि राम हैं, दुनिया देखै नांहि॥

* * * * * *

२. तुलसीदास के दोहे

कवि परिचय :

महाकवि तुलसीदासजी का जन्म सन् १५३२ में हुआ था। आप रामभक्ति शाखा के सर्वश्रेष्ठ रचनाकार माने जाते हैं। आपके पिता का नाम आत्माराम दुबे और माता का नाम हुलसी था। आपके गुरु 'बाबा नरहरिदास' थे। आपके आराध्य देव श्री रामचन्द्र थे और लोकमंगल भावना आपके काव्य का सिद्धांत रहा। आपने अन्यान्य काव्यशैलियों का प्रयोग करते हुए कई रचनाएँ हिन्दी साहित्य जगत को समर्पित कीं। आपकी मृत्यु सन् १६२३ में हुई। 'रामचरित मानस', 'विनय पत्रिका', 'कवितावली', 'गीतावली', 'जानकी मंगल' और 'दोहावली' आपकी सर्वश्रेष्ठ रचनाएँ मानी जाती हैं। आपका अवधी और ब्रजभाषा पर समान अधिकार था।

प्रस्तुत दोहों में रामभक्ति, नीति, सदाचार, विनय, दान एवं जीवन के समस्त पक्षों पर प्रकाश डाला गया है।

एक भरोसो, एक बल, एक आस, विश्वास।
स्वाति-सलिल रघुनाथ-जस, चातक तुलसीदास॥ १ ॥

जग ते रह छत्तीस है, राम चरन छः तीन।
तुलसी देखु विचार हिय, है यह मतौ प्रबीन॥ २ ॥

तुलसी संत सुअंब तरु, फूलि फलहिं पर-हेत।
इतते ये पाहन हनत, उतते वे फल देत॥ ३ ॥

तुलसी काया खेत है, मनसा भयौ किसान।
पाप पुण्य दोउ बीज हैं, बुवै सौ लुनै निदान॥ ४ ॥

मधुर बचन तें जात मिटै, उत्तम जन अभिमान।
तनक सीत जलसों मिटै, जैसे दूध उफान॥ ५ ॥